मेरी आवाज़

उन ~~शब्दों~~ बातों को जिसे मैंने थी बुनी,
वह रह गई अनसुनी।
सन्नाटे को चीरती मेरी वह तलवार,
कर नहीं पाय उस खामोशी को पार।
मुझे जो कहना था उसे सुनलो,
भविष्य को भार मत बनने दो।

करके खुद के कल की फिक्र,
कर नहीं पाते मानव खुशी का ज़िक्र।
ज़िन्दगी की आपाधापियों में होकर मगन,
भूल जाते हैं मानव सारा गगन।
मुझे जो कहना था उसे सुनलो,
भविष्य को भार मत बनने दो।

पसीना बरसाके पूरी की थी सारी कमी,
फिरभी क्यों आँखों में एक अजीब सी नमी।
यह हकीकत सब लोगों में बसती है,

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 641 Participant Code: 108

जो देखकर दुनिया हसती है।
मुझे जो कहना था इसे सुनलो,
भविष्य को भार मत बनने दो।

मुक्त करके सीनें को सारे पिंजरों से,
बस बनादो फूल अंगारों से।
नव बरसेगा पानी अब्रों से,
नाकी तुम्हारे नैनों से।
मुझे जो कहना था इसे सुनलो,
भविष्य को भार मत बनने दो।

यह बातें बनेंगी चाँद, तुम्हारे शानों के,
दूर करेंगी सारी बलाएँ तुम्हारे रास्तों के।
ज़िन्दगी एक है, अपनी तमक को चुनो,
और मेरी यह आवाज़ सुनो.....
मुझे जो कहना था इसे सुनलो,
भविष्य को भार मत बनने दो।

ज़िन्दगी के चोटों को भुला दो,

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 641 Participant Code: 108

फ़ुर्सत से एक नई सुबह का मज़ा लो,
निभाओ अपनी ज़िम्मेदारी,
पर छोड़ के अपनी बेचैनी साथी।
मुझे जो कहना था उसे सुनलो,
भविष्य को भार मन बनने दो।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)